छुटकी चित्रकथा- 6

छुटकी बनी स्वच्छता दूत

एक कदम स्वच्छता की ओर

छुटकी बनी स्वच्छता दूत

सिहोर जिले के समस्त ग्रामीण क्षेत्र को खुले शौच से मुक्त कराने के अभियान के लिए स्त्रोत सामग्री के रूप में तैयार कथा चित्र।

® सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशन वर्ष – दिसंबर 2014

द्वितीय संस्करण – 5000 प्रतियां

चित्रांकन एवम् मुद्रण – एम.एस.पी.ऑफसेट, भोपाल

सहयोग – WaterAid

छुटकी समर्थन की परिकल्पना है। कृपया सामग्री का उपयोग उचित स्वीकृति के बाद ही करें।

छुटकी बनी स्वच्छता दूत

समर्थन

समर्थन

सेंटर फॉर डेवलपमेंट सपोर्ट

36, ग्रीन एवेन्यू, चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

छुटकी अपने मामाजी के गांव छुट्टियां मनाने आई है...
मामाजी ...मामाजी..!
नमस्ते मामाजी.. , अरे गोपाल, तुम तो बहुत लम्बे हो गए हो।''
''प्रणाम दीदी''
छुटकी मामाजी और गोपाल के साथ घर की और जाती है...

छुटकी की मामी गांव की सरपंच है, वे छुटकी के स्वागत के लिए घर के सामने खड़ी हैं...
आओ..आओ.. छुटकी!
सरपंच
श्रीमती कमला
नमस्ते मामीजी!
आओ छुटकी, अच्छा हुआ तुम आ गईं घर में कुछ समय तक रौनक रहेगी।
मामीजी ने रात छुटकी को बढ़िया खाना खिलाया और हालचाल पूछे...

अच्छा मामी, आपकी सरपंची कैसी चल रही है ?
कोशिश तो पूरी है कि अच्छे से चले..
अरे ये तो सरपंची के काम में मुझे भी भूल जाती हैं।
छुटकी तुम्हारे गांव को तो निर्मल ग्राम का पुरस्कार मिला है ना ?
हां मामी!
तो आज हमारे गांव में ग्राम सभा है, तुम भी चलना और अपने गांव के बारे में बताना।
मुझे भी अच्छा लगेगा मामी।

छुटकी अपने मामा-मामी और गोपाल के साथ पंचायत भवन की ओर जा रही है रास्ते में...
यह क्या मामी, यह बच्चा खुले में शौच कर रहा है!
... और वो लड़कियां बाहर शौच के लिए जा रही हैं?
हां छुटकी, अपनी सरपंची में मैं घर-घर में शौचालय नहीं बनवा पाई।
आज की ग्राम सभा में भी तो यह मुख्य एजेण्डा है,पर लोग शौचालय बनावाने के लिए तैयार ही नहीं होते।
चलिए मिलकर कोशिश करेंगे। मैं भी तो आपके साथ हूं।

ग्राम सभा में छुटकी ,मामी और अन्य पंचों के साथ बैठी है
आज की ग्रामसभा की कार्यवाही का प्रमुख एजेण्डा है गांव के हर घर में शौचालय बनाना।
शौचालय-शौचालय....। फिर वही बात!
हमें तो समझ नहीं आता कि शौचालय क्यों जरूरी है ?

हां बाप-दादा के जमाने से तो हम खेत, नदी-नाले में जाते हैं अब ये नया शहरी-फैशन आ गया है।
यह शहरी फैशन नहीं है भैय्या! आज की जरूरत है।
सही है लाज के मारे उजियारा होने से पहले जाना पड़ता है शौच को।
हां, थोड़ा उजियारा हो जाए तो मरद जाने लगते हैं। शर्म के मारे बार-बार खड़े होना पड़ता है।
सिर्फ औरत की शर्म की बात नहीं है काकी! आदमी लोगों का भी खुले में शौच के लिए बैठना उतनी ही शर्म की बात है।

बात तो सही है। आजकल जंगल भी तो नहीं हैं कि आड़ हो जाए। लाज तो हमें भी आती है।
और फिर बाहर खुले में जाने में और भी खतरे हैं। सांप, बिच्छु...।
और कई बार बदमाश लोग छेड़खानी और उल्टी-सीधी बातें करते हैं।
अब आप लोग ही बताइये कि हर घर में शौचालय बनवाना जरूरी है या नहीं?

बिटिया तुम हमारे गांव की तो नहीं हो, तुम कौन हो ?
अरे ये मेरी भांजी है छुटकी। छुट्टियां बिताने आई है।
और इसके गांव को निर्मल ग्राम का पुरस्कार भी मिला है।
सबको नमस्ते, राम-राम। हां अब निर्मल भारत अभियान का नया नाम 2 अक्टूबर से 'स्वच्छ भारत मिशन' हो गया है। और गांव में इस मिशन को स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) कहेंगे!
मैं तो समझता हूं कि शौच के लिए बाहर जाने में कोई नुकसान नहीं है। घूमना भी हो जाता है।
नुकसान ही नुकसान है काका।

वो कैसे ?
हमारे मल में कई तरह की बीमारियों के दिखाई नहीं देने वाले कीटाणु होते हैं। हम जब खुले में शौच करते हैं तो मल पर मक्खियां बैठती हैं।
हां मैंने भी पढ़ा है कि मल मक्खियों के पैरों में चिपक जाता है और फिर ये मक्खियां हमारे खाने में बैठती हैं।
हां फिर वो कीटाणु हमारे खाने के साथ हमारे शरीर में चले जाते हैं।
बकवास है! मक्खी कोई पक्षी है कि खेत से उड़कर घर तक आ जाएगी।
काका, मक्खी 3 किलोमीटर तक उड़ सकती है।

छुटकी, ये तो बताओं कि कौन-कौन सी बीमारियां हो सकती हैं।
वैसे तो 40 प्रकार की बीमारियां हो सकती हैं पर खास-खास हैं हैजा, उल्टी-दस्त, पीलिया टाइफाइड...
जरा सोचिए बीमारी होने पर कितना खर्चा हो जाता है। बच्चा स्कूल नहीं जा पाता और अगर कोई बड़ा बीमार हो जाए तो काम का नुकासान होता है।
बाहर शौच करने पर बरसात में इसकी गंदगी जमीन के अंदर तक पहुंच जाती है,और हैंडपंप का पानी तो हम पीते हैं!
भला जमीन के नीचे कितनी गंदगीजा सकती है कि हैंडपंप के पानी से हमें नुकसान होगा!
सोचिए अगर हम किसी बच्चे के मल में एक पतला धागा छूकर उसे पीने के पानी के गिलास में डाल दें और कहें थोड़ा सा ही छुआ है, तो क्या आप पिएंगी ?

शौचालय बनवा भी लेंगे तो छोटे बच्चे तो उसमें बैठ नहीं सकते। उन्हें तो बाहर ही कराना होगा।
पर भाभी उनका, मल तो शौचालय में डालकर बहा सकते हैं
पर शौचालय भी तो गंदे रहते हैं। वहां भी मक्खियां भिनभिनाती रहती हैं
घर का हर व्यक्ति शौच जाने या पेशाब जाने के बाद पानी डाले और झाड़ू मार दे तो शौचालय साफ रहेगा
मतलब, हर बार शौचालय का उपयोग करने के बाद हमें अपने हाथों को साबुन से अच्छी तरह धोना चाहिए, साथ ही पैरों को भी धो लेना चाहिए।
हां, हमें खाना बनाने और खाना खाने से पहले भी हाथ साबुन से धोना चाहिए।

और हमें अपने नाखून हमेशा काटकर छोटे रखने चाहिए, जिससे उसमें मैल जमा न हो।
बच्चों की शौच धोने के बाद और कंड़े थापने के बाद भी साबुन से हाथ धोने चाहिए।
यह तो साफ-सफाई की कक्षा लग गई। पर यह तो सोचो शौचालय बनवाने को 30-40 हजार रुपए कहां से आएंगे।
हां काका! दो गढ्ढे वाला शौचालय जिसको 'लीच पिट' कहते है 10 से 12 हजार रुपए में बन जाता है
अच्छा! और बताओ जरा इसके बारे में।

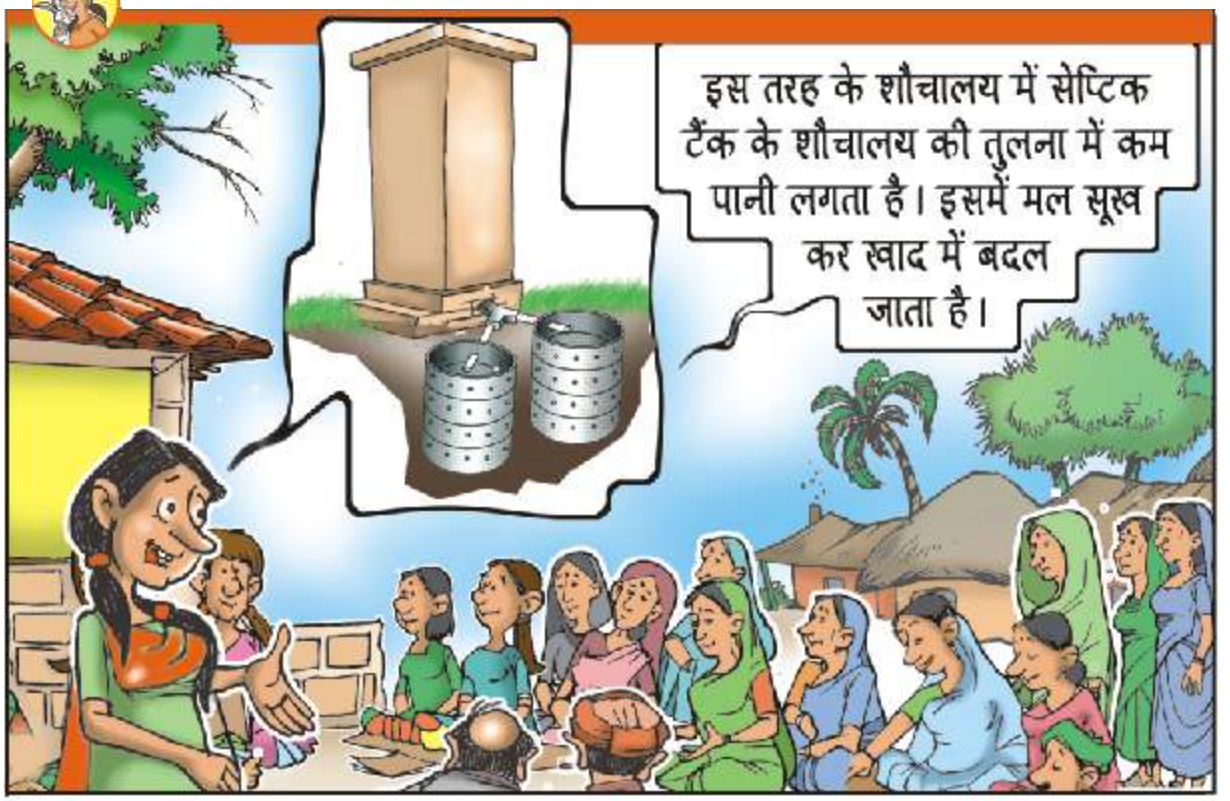
इस तरह के शौचालय में सेप्टिक टैंक के शौचालय की तुलना में कम पानी लगता है। इसमें मल सूख कर खाद में बदल जाता है।

एक सोखते गढ्ढे को भरने में 5 से 6 साल लगते हैं और भरने के बाद 15 महिनों में मल सूखकर खाद में बदल जाता है और खाद को निकालकर हम गढ्ढे का उपयोग फिर से कर सकते हैं।
पर यह बनाएगा कौन ?
हमारी पंचायत में ट्रेंड मिस्त्री हैं इसको बनाने के लिए।

सब कुछ ठीक है पर क्या 12 हजार रुपए भी मुफ्त में आते हैं?
समझो काका मुफ्त में ही मिल जाएंगे।
कैसे बिटिया बताओ तो जरा?
वैसे तो यह बात आपकी सरपंच बताने वाली हैं, पर मुझे बताना भी अच्छा लगेगा।
सुनिये सब लोग...आजकल स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत पारिवारिक शौचालय बनवाने के लिए प्रत्येक परिवार को सरकार की तरफ से 12000/- रुपए प्रोत्साहन राशि के रुप में मिलेंगे।

पर हां, शौचालय के साथ पानी की एक टंकी और हाथ धोने के लिए वाश बेसिन बनाना जरूरी है
इसका मतलब हुआ कि हमारे गांव में हर परिवार में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत शौचालय बन सकते हैं।
सरकारी पैसा अगर कम पड़ जाए तो ?
तो थोड़ा पैसा अपने पास से लगा लीजिए।
वाह, हम अपने पैसे क्यों लगाएं ?
काका, आप अपने बच्चों को 2 हजार से 5 हजार रुपए तक का मोबाइल, खरीद कर देते हैं। क्या उसके लिए सरकारी सहायता मिलती है ?

शौचालय तो पूरे परिवार की जरूरत है। हमारी इज्जत के लिए हमारी सुरक्षा के लिए और हमारी सेहत के लिए यह जरुरी है।
क्या इतनी बात सुनने-समझने के बाद भी हमें लगता है कि शौचालय हमारी जरूरत नहीं है?
जरूरी है-जरूरी है।
वाह छुटकी तुम तो स्वच्छता दूत बनकर आई हो।
मामाजी मैं अपने गांव में स्वच्छता दूत ही हूं।

वो क्या होता है ?
किसी भी गांव की ग्राम सभा अपने गांव के किसी आठवीं पास या उससे अधिक पढ़े-लिखे युवक या युवती को स्वच्छता दूत के रूप में चुन सकती है।
उससे हमें क्या लाभ मिलेगा ?
स्वच्छता दूत समाज की सेवा के लिए बनते हैं, लाभ कमाने के लिए नहीं।
स्वच्छता दूत किसी परिवार को शौचालय बनवाने के लिए प्रेरित करता है तो वह परिवार, पंचायत और समाज के लिए एक मिसाल बने और अपने गांव को एक आदर्श एवं स्वच्छ गांव बनाने में मदद कर सकता है।

पर हमारा गांव तो बहुत बड़ा है। एक स्वच्छता दूत कितना काम करेगा?
इसीलिए तो शासन ने हर 150 परिवारों पर एक स्वच्छता दूत चयन करने का सुझाव दिया है।
अब तो हम भी अपने गांव को छुटकी के गांव की तरह स्वच्छ ग्राम बनाएंगे।
तो कल से ही हम अपने घरों से स्वच्छता अभियान शुरू कर देंगे।
और शौचालय बनने के बाद उसका आजीवन नियमित उपयोग भी करेंगे।

खाना बनाने, परोसने, खाने और खिलाने से पहले और शौच के बाद , बच्चों का मल उठाने और कंड़े थापने के बाद साबुन से हाथ धोएंगे।
इसके साथ ही अपने घर के कूड़े-कचरे और गंदे पानी का सही निपटान करेंगे।

और आज से मैं भी बाहर शौच करने नहीं जाऊंगा।

सेन्टर फॉर डेवलमेंट सपोर्ट

सहभागी अभिशासन और विकास को बढ़ावा देने के लिए संकल्पित

समर्थन 1995 से मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के कई जिलों में कार्यरत एक स्वैच्छिक संगठन है। इसके प्रमुख उद्देश्यों में सहभागी अभिशासन और विकास को बढ़ावा देना है। समर्थन का यह सतत प्रयास है कि नागर समाज की संस्थाओं यथा पंचायत और शहरी निकायों की क्षमता वृद्धि कर उसे मजबूत बनाया जाये, जिससे ये निकाय वंचितों की आवाज शासन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी निभायें।

समर्थन ग्राम सभाओं की सक्रियता बढ़ाकर समुदाय के सम्मुख ग्राम पंचायत को पारदर्शी बनाने के लिए सोशल आडिट को बेहतर बनाने की जिम्मेदारी निभा रहा है। सूचना के अधिकार के उपयोग का विस्तार करना और इसके लिए निरन्तर परामर्श देना भी समर्थन का एक लक्ष्य है। ग्राम पंचायतों द्धारा सहभागी नियोजन, नागरिकों द्धारा बुनियादी सेवाओं के प्रबंधन एवं निगरानी को सुदृढ़ करने के लिए समर्थन ने अपने जमीनी अनुभवों द्धारा ऐसे उदाहरण स्थापित किए हैं, जिन्हें दोहराया जा सके।

किशोर-किशोरियों के स्वास्थ, ग्रामीण स्तर पर लोगों द्धारा ही पानी का प्रबंधन, स्वच्छता, युवाओं का नेतृत्व अनेक क्षेत्र है जहां समर्थन द्धारा किये गये प्रयास एक अनुकरणीय मॉडल के रूप में सामने आये है। अपने समस्त प्रयासों और प्रयोगों को आधार बनाकर समर्थन ने स्रोत सामग्री के रूप में कई लघुवृत्त चित्रों का निर्माण किया और प्रशिक्षण पुस्तिकायें प्रकाशित की है।

समर्थन का निरंतर प्रयास है कि ग्रामीण क्षेत्रों के किशोरों, युवकों, प्रौढ़ों महिलाओं और दलित समाज में निर्णय लेने की क्षमता का विस्तार हो और वे गांव के विकास के लिए आगे आयें।

इस सामग्री का प्रकाशन एवं वितरण समर्थ-इन पार्टीसिपेटरी एक्शन सोसायटी के द्वारा किया गया है

अब तक प्रकाशित छुटकी चित्रकथाएं

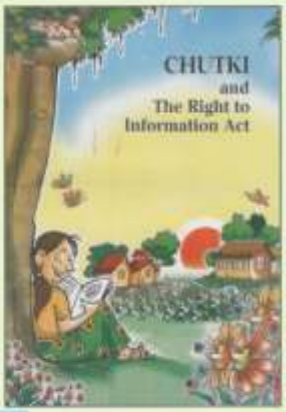

छुटकी और सूचना का अधिकार : छुटकी अपने स्कूल में सूचना अधिकार के बारे में सीखती है और फिर गांव में आकर अन्य लोगों को ना केवल प्रत्येक चरण के बारे में बताती है बल्कि उनके साथ सरकारी कार्यालय जाकर शासकीय कर्मियों द्वारा किये जाने वाले प्रतिरोध से मुकाबिला करना भी सिखाती है। मांग पर इस कथा का अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित किया गया।

छुटकी और सामाजिक सुरक्षा : इस कथा में छुटकी के शहर की एक मलिन बस्ती में अपने एक रिश्तेदार के घर घूमने आती है और बस्ती वासियों को विभिन्न प्रकार की सामाजिक सुरक्षा योजना यथा वृद्धावस्था, निराश्रित, विधवा योजना के बारे में बताती है.

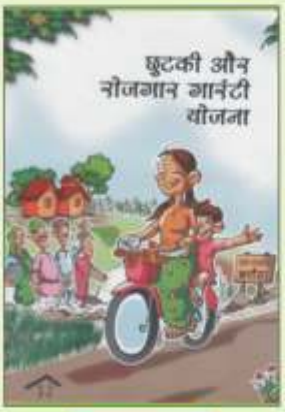

छुटकी और रोजगार गारंटी योजना: छुटकी अपने मामा के गांव आती है और लोगों को रोजगार के लिये गांव से पलायन करते देखती है। वह विस्तार से लोगों को ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (वर्तमान में महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत आवेदन करने के तरीके के बारे में विस्तार से बताती है

किशोरावस्था एवं प्रजनन स्वास्थ्य पर पुस्तिका: छुटकी आशा कार्यकर्ता के रूप में किशोरियों को गांव में लगे स्वास्थ्य सम्मेलन में ले जाकर प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में बताती है ; वह किशोरों को भी किशोर स्वास्थ्य के बारे में शिक्षित होने की प्रेरणा देती है। वह महिला डाक्टर से भी परामर्श लेती है.

किशोरावस्था और जीवन कौशल: इस चित्रकथा में छुटकी विभिन्न प्रकार की स्थितियों में 10 प्रकार के जीवन कौशल का उपयोग कैसे कर सकते हैं, इसे लेकर किशोरी-किशोरियों से सम्वाद करती है.

समर्थन
सेंटर फॉर डेवलपमेंट सपोर्ट
36, ग्रीन एवेन्यू, चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत
Tel : (0755) 2467625/9893653713(O); Fax (0755)2468663
Email : infor@samarthan.org, Website : www.samarthan.org